No. १८८० / क

Title रागाध्यायः (संगीत महोदधिस्थः)

Author गोस्वामी क.कारामः

Extent १८ पत्र Age

Subject संगीत शास्त्र

रागाध्याय

नं. १८८०

१८ पत्राणि

सं. १८८०

१८ पत्राणि



रा०
१

अथ रागाध्यायः प्रारभ्यते। टीका। अब स्व
राध्याय तालाध्याय वाद्याध्याय नृत्याध्या
य कथन करणे के अनंतर रागाध्याय का
प्रारम्भ करते हैं। अब बुद्धिमानो को वि
चारणा योग्य है जो देश देशमे रागों के
नाम भिन्न भिन्न हैं और हर देशमे उसके
वर्तने की तर्कीबभी और तरोंकी पाई।
जाती है एक घराने में दूसरे उस्तादों के

१

घराने मैं भी कुछ विचित्रता पाई जाती है
और जो निबंध हैं उनका अभिप्राय भी कै
रागों मैं भिन्न भिन्न परस्पर विरुद्ध दिखा

अथ रागाध्यायः प्रारभ्यते ।। संगीतनारायणे ।। देशे देशे भिन्नता
न्तो रागाणां तत्वनिर्णयः को ऽपि कर्त्तुं न शक्नोति निबंधाः नव
मन्मथाः ।१।

ई देता है इससे इनका तत्व है ।। संपूर्ण नि   प्रचित्
र्णय कोई भी कर नहीं सकता क्युंकि जो
जो गुणी लोक गायन करणे वाले अने-

गा. २ क विवाद करकर अपने घराने को मान्य।
मानते हैं क्या जाने कौन झूठा है उनका नि
बेडा संगीत शास्त्र मुताबिक होता है इस

अतोऽत्र दृष्ट्वा संगीतान्दर्पणादीन्विविच्यते कल्पद्रुमे च संगीते ना
रायनमथापरम्। अन्यान्निबंधान्संवीक्ष्य संविचार्य्य यथामति।।५।।

विस्तरण

विचारकर

वास्ते यथामति कथन करता हूँ बालमुकुं
द संगीत दर्पण तथा संगीत कल्पद्रुम सं
गीत नारायण संगीतप्रकाश नारदीय।

वालावस्था के
केवृक्ष वीणावा
दन तत्पर जो
सरस्वती है ति
नको ~~तब~~ ध्या
करके

२

संगीतनाघनेक संगीतों मैं एकत्र करकर व

रनण करता है प्रथम राग कौन मैं है और

रागनीयो कौंन है येही प्रस्न नारदजीने।

धन्यासरस्वती मू २

रागाणां प्रक्रियां वक्ति वालांदिमसकेदकः॥ नारद उवाच॥ के रा

गाः का स्वरागिणः का वेलास्तत्वस्थके किंरूपं कथमब्धारोवदंदे

वप्रसादतः॥४

श्रीभगवानजीको करा है देव राग किन।

को कहते है और उनमें पुरुष कितने हैं॥

और स्त्रियां कितनीयां है और उनके उच्चा

रा०
३

रागकरणेका समय कौन कौन है और स्व-
तः स्वरूप उद्धार क्या स्वरोंकी गिनती त
था मैत्रादिक साधनभी येह सभी कृपाक

श्रीभगवानुवाच ॥ भैरवो मालकौंशश्च हिंडोलो दीपकस्तथा । श्री
रागो मेघरागश्च षडेते पुरुषाः स्मृताः ॥ ५ ॥

र कथन करो श्रीभगवानजी बोले कै राग
है जैसे भैरव १ मालकौश २ हिंडोल ३ दी
पक ४ श्रीराग ५ मेघराग ६ और त्रिप्रांति

३

रागिनियांहैं भैरवी १ गूर्जरी २ टोडी ३ राम
कली ४ वराडी ५ इस मतमैं भैरवकीयां
येह रागिनीयांहैं। ६ इति भैरव पत्न्यः॥ वामी

भैरवीगुर्ज्जरीचैव टोडीरामकलीतथा विराटीचैवसं
युक्ता भैरवस्यवरांगनाः ६

षरी १ ककुभा २ पर्ज्ज ३ शोभनी ४ विभा
वती ५। इति मालकौशस्य। वसंती १ पं
चमी २ हिंडोली ३ ललिता ४ मालसिरी ५

रा°
४

इति हिंदोलस्यां। प्रदीपकी १ धनाश्री २ जय
तश्री ३ पलासी ४ नाटिका ५ इति दीपक।
स्यां। मालवी १ त्रिवेणी २ गौरी ३ पूर्वी ४ गौ

वागीस्वरीं चक्कुभा पर्यंका शोभनी तथा हेमावती प्रनर्जे या मालकौंश
स्य वल्लभाः॥२॥ वसंती पंचमी चैव हिंदोली ललिता तथा मालश्रीः पंचरागि
न्या हिंडोलस्य प्रिया इमाः ३॥

रा ५। इति श्रीरागस्यां। मलारी १ सोरठी २
सारेग ३ बडहंस ४ मध्यमादि ५। इति मे
घरागस्यां॥ येह त्रिंशान रागिनीयो ब्रह्मने

गीतरत्नाकर मतमें कथनकीयो हैं और म
तमें भिन्न भिन्न हैं जैसें शिवमत हनुमान

प्रदीपकीधनाश्रीश्च जयतश्रीपलाशिका नाटिकासहिता
एता दीपकस्य वरांगनाः ४॥ मालवी त्रिवणीगौरी गौराए
वीतयांपरा श्रीरागस्योत्तमाः पंच प्रियाएता विनिश्चिताः ५
मल्लारीसोरठीचैव सारंगावडहंसिका मध्यमादिस्तथाज्ञेया
मेघरागस्य वल्लभाः ६॥

मतानुयायी संगीतदर्पणमें विशेष यहक
थन कीयो हैं। मध्यमादि भैरवी बंगाली

रा॰ बराटिका मैंघवी ५। येह भैरव कीयां। टोडी
त्रिभावती गौरी गुनकली कुकुभा ५। येह
मालकौंशकीयां। बेलावली रामकली देवगा
त्रि पटमंजिरी ललित ५। येह हिंदोलकी
यां। कान्हड़ी देसकारी कामोदी नाटिका
केदारी ५। येह दीपककीयां। बसंती माल

वी मालवश्री धनाश्री: आसावरी ५। येह
श्रीराग कीयो। मल्हारी सोरठी भूपाली
गूजरी टेक ५। येह मेघराग कीयो लियो
सब भरत मतानुसार कहितेहैं। श्रीराग
बसंत भैरव पंचम बृहन्नाट मेघराग ६
येह पुरुषहैं अरु एक एक के आठ आठ।

ग्र·
६

6

पुत्र चालीस चालीस नूंहो सो भिन्न भिन्न उ
सी उसी राग के साथ वर्णन होवेगे। अब जो
दामोदर के मतानुसार राग छे ६ रागिनी·
यों ३· मानीयो हैं सो स्वराध्याय में प्रतिपा
दन कर छडीयो हैं। अब पंचम सार संहि
ता में येह षट् राग हैं। मालवा मल्लार श्री ६

राग बसंत हिंडोल कर्णाट ६। अथ मन्म

थाचार्यकृत संगीतरत्नमाला में येह हैं — छे राग

कर्णाट मालव देशी देस लव बसंत ६

इस मत में रागिनीयो येह हैं। चांदनी मा

लवश्री सिंधु वेलावली अपाडिनी विभा

षा ६। इति कर्णाट पत्न्याः। कोबोली नाट

रा०
७

भाषा नाटिका गुणमेजिरी प्रोषरी माधवी ६
येह मालवकीयें। मल्लारी ललिता पटमं
जिरी मधुकारी डुगयकारी देसीमल्लार ६
येह देसी कीयें। (स्त्रियां) गुर्जरी रामकिरी गुण०
करी सुवेदिका धनासी वराटी। ६। येह ले
मरागकीयें। सिंधवी केदार मेघ मार्झारि
७

का केयु विंता ६। येह लव रागकीयो। ल
वणी स्यावला भैरवी रंगहारि मेघतानी
पंचमी ६। येह वसंत कीयो। अरु येह दोभी
कहैंहैं अवातोजी नोटक।। अब संगीतकौ
सदीमें येह छहे राग लिखोहै। प्रथम भैर
व भूपति श्रीराग पटमंजिरी वासंतिक।

रा०
८

भूपाल ६। येह रागजाति आदिकोंका कथ
नहै। वत्न विंशति इनकी ये पत्नी येहैं। दा   अथ
4
क्षिणात्यानि वेथे पुरुष राग अष्टहैं जयमें
भैरव भूपाल। श्रीराग। पटमंजिरी वसंत
मालव वैसव नाटक ८। येह आठ कहेहैं
स्त्री पुरुषके जानने का फल नारदजी कथ

८

न करते हैं। अमैंथ राग गाना उसके पीछे
उसकी स्त्री गावनी और रागकी स्त्री भिन्न
रागके साथ गानेका दोष है परंतु राजाकी
आज्ञामें दोष नहीं है और हरिनायिकादिकोंने
इस बातको कल्यांतर परमाना है। अब।
येह राग सभी तीन प्रकारके हैं एक ओड

रा॰ ५ व अर्थात पांच स्वरका दूसरा षाडव छै स्वर
का अरु तीसरा संपूर्ण सात स्वरका अरु ए
क राग संकीर्णभी होतेहैं जिनकों संकर॰
स्वर अरु शुद्ध स्वरभी लगै उनकों संकी॰
र्ण कहते हैं जैसें भैरवीन्यादि संकीर्ण से
नकैहैं ॥ अब नारायणने इनकों संपूर्णक ५

येहकात गुप्त है

हाहै श्रीराग नाट कर्णाट वेथ नेड वसं
त शुद्धभैरव बंगाल ८। सोमराग पंचम
कामोद मेघराग द्राविड गौडिल वराटी
गूजरी १८। टोडी मालवश्री सैंधवी देव
कली रामकली प्रथममंजिरी नट बिला
वल गौड २५। इतिप्रादिक राग मेहुणाहैं

त्पा

रा०

२० सो इत्यादिक पद में येह राग संगीत सार

कहे है में नाट वेटारव नटनारायण भूपति

10

केनइत्याँह॥ श्रीरागनाटकर्णाट वेयरूलिडव संतकाः श्रुद्धभैरव
बंगाल सोमरागाश्च पंचमः। कामोदोमेघरागाश्च तथाद्ध विडगौ
डिलौ वराडीगूर्जरीटोडी मालवश्रीश्च सैंधवी। देवक्रीवैंवराम॰
क्री तथाप्रथममंजिरी नाटावेलावलीगोडी त्यायाः संपूर्णकामताः।

शंकरा भरण येह भी संपूर्ण राग हैं इनके

गान करणे का फल कोहलने कथन करा

१०

हैं अरु जो आयुः धर्म यश कीर्ति स्त्राव धन।
राज्यकीवृद्धि संतान येह सभी फल संपूर्ण

आदिपदेननाटादयःग्रह्यंते तदुक्तम संगीतसारे ॥ नाटश्चेदारवैरा
ट नारायणोभूपति। शंकराभरणश्चेति एतेरागाउमेमताः॥ एतद्गानः
फलमाह कोहलः ॥ आयुर्धर्मयशःश्रीभिः राष्ट्रवृद्धिर्लयैश्च धन।
धान्यैःस्नावैश्चैव सन्ततिश्चिरजीवनी ॥

रागोंके गायन करणे से प्राप्त होते हैं। अब षा
डव राग कथन करते हैं। जैसे गौंड कर्णा

षा॰ ट गौर देषी धनासिका कोलाहल वलारी

११ देषाष प्रावरी स्वस्याव, हर्षपुरी मल्लारी।

अथ षाडवरागा उच्यंते ॥ षाडवास्तेऽभिधीयंते ये रागा षट्स्वरा मताः।
केतइत्याह ॥ गौडः कर्णाट गौरश्च देशी धन्नासिका तथा कोलाहल
श्च वहुलारी देशाख्यो मावरी तथा स्वस्थावरी हर्षपुरी मल्लारी हंसिका
तथा ॥ इत्याद्याः षाडवाः प्रोक्ताः हरिनायकसंमताः आदिपदेनान्येपि
नडके संगीतसारे ॥

हंसिका इत्यादिक संगीत नारायणमें षाड

व गिने हैं। अह संगीतसारमें येहभी कथन॰ ११

कौरैहैं श्रीकंठ भैली नाट मालव गौड शु

द्धाभीरी मधुकरी छाया नीलोत्पला इन

श्रीकंठश्चैव भैलीच नाटमालवगौडकः शुद्धाभीरी मधुकरी छाया
नीलोत्पलापि चेति ॥ संगीतनारायणे फलमाह कोहल। संग्रामीवी
रतानूपं लालयन् गुणकीर्तिनं षाडवरागाणां गादितं एवं सूरिभिः।
श्रयोऽत्वाः रागाउच्यंते संगीतनारायणे। ओडवाः पंचभिः स्वरैः केतर
न्याह॥

का कोहल फल कहत हैं संग्राम योगप भू

रता अरु नृप गुणकरके विख्यात होनी ये

रा॰ ह षाडवौं रागोंके फल हैं अपने मतमें वर्त-
१२ मान षाडव येह हैं जैसें विहाग ऋषभही

12

मध्यमादिश्च मल्लारो देशपालश्च मालवः हिंडोलो भैरवो गांधारि
गौडकृतिस्तथा। ललिताचैततः छाया टोडी वेलावली तथा प्रताप
पूर्विका प्रोक्ता सैंधवी हित्रयिस्तथा॥ इत्यादयः आधुनिकगणिसे
षरापैन्याप्रवृत्तिः भाषाटिपने प्रोक्ता॥ ८ ॥

न और भूपाली उतरा मध्यम हीन ललित
पंचम वर्जित इत्यादिक राग हैं। अब औड

व पांच स्वरके रागको कहितेहैं नारायण:

श्रीक येह रागिनियांहैं मधुवंत मल्लारदेश

पाल मालव हिंदोल भैरव रागाधनि गौ

अथसंगीतदर्पणेरागविवेकाध्यायेरागलक्षणम् ॥ योयंध्वनिविशे
षस्तु स्वरवर्णविभूषितः रंजकोजनचित्तानां सरागःकथितोबुधैः

ड़कृति ललिता छाया तोडी वेलावली अ

लापपूर्विका भैरवी रयि इत्यादिक कथ

न करीहैं इनमें अब प्रकृति येहहैं मधुमा

रा०
१२ हैं

13

त तो पांच स्वरकी है गंधार धैवत वर्जित औ
र मल्हार संपूरण औरं मारवा ललित षाड
व छाया टोडी सैंधवी इत्यादिक संपूरण

अथ रागांगाः ।। रागच्छायांगकारित्वा द्रागांगमिति कथ्यते करु
णोत्साहसंयुक्तः क्रियांगस्तेन हेतुना ।। किंचिच्छायांगकारित्वा

हथैं हिंदोल मालकौंश तिलंग इत्यादिक
औडव हैं। अब संगीत दर्पणके रागविवे
काध्यायके अनुसार रागोंके लक्षण। कहिते हैं

नोघ कया प्रेरणा किसे वाद्यमें अथवा भाव
आदिकों करके प्रेरित जो सप्तस्वर वर्णो वि
भूषित शब्द विशेष है उसका नाम राग है परं
तु जनोंके चित्तोंके चित्तोंको रंगने वाला।
हो और भी इसके लक्षण आगे कहेंगें अब
रागों के चार अंग हैं सो जैसे रागांग क्रिया

रा. ग उपांग कों डारण। येह चार प्रकार हैं प्र
१४ थम इसरे रागकी छायासैं रागांग कहा

14

रागांगमितिकथ्यते करुणोत्साहसंयुक्तः क्रियांगत्वेन हेतुना किंचिच्छा
यांगकारित्वा उपांग इति कथ्यते कोडारणं प्रकथिता नारस्यस्य स्वशीत्वता
गमकैर्विविधैर्युक्ताः कोशिल्पेन विभूषिताः॥ प्रथमते गमते न रागाणां त्रै
विध्यम्॥ शुद्धाः छायालगाः प्रोक्ताः संकीर्णाश्च त्रिधा मताः शास्त्रोक्त नि
यमैर्यत्र रंजकः शुद्ध उच्यते॥

जाता है और करुणा तथा उत्साह करके जो
युक्त होवे सो क्रियांग कहा है जिस रागको १४

किंचित मात्र छाया होवे वोह उपांग राग

होता है और जिसमें नाम की भी स्थिति रहे

और शीघ्रता से राग को करके एक अने

क प्रकार की चतुरता से जो राग हो सो

को उपरण राग होता है अब मतंगाचार्य

के मत से राग के त्रय प्रकार दिषाते हैं।

ग॰ प्रथम शुद्ध दूजे छायालग तीजे संकीर्ण॥
१५ शुद्ध वोह होताहै जो संगीत शास्त्रनिय
15 मोक्त प्रकार में यथार्थ रंजक हो और जो
दूसरेकी छायामें मनरंजन करे सो छा
यालग कहते हैं और जिसमें शुद्ध अरु
संकर दोनो प्रकारके स्वर लगें सो संकी १५

ते राग होता है अरु येही मत कल्लिनाथ।
ने भी कहा है अब येह जो छै राग हैं सो कल्पांत
र में पार्वती और शिवजी में उत्पन्न हुवे
हैं जैसे सद्योजात मुखते श्रीराग उत्पन्न
हूवा अरु वामदेवतें और वसंत अघोरते
भैरव अरु तत्पुरुष तें पंचम और ईशान

रा॰ १६ तें मेघराग और गिरजाके मुखतें नटनारा
यण होता भया और रागिनियांभी होतियां

16

रागान्यच्छायासंयोगा द्रागः छायालगः स्मृतः शुद्धसंकरसंयैर्युक्तः।
संकीर्णोरागउच्यते ॥ एतन्मतं कल्लिनाथेनापि सम्मतम्। अथरागोत्पत्तिः
शिवशक्त्यासमायोगा द्रागानां सम्भवोभवत्। पंचास्यैः पंचरागाहि षष्ठ
स्तु गिरिजामुखात्। सद्योवक्त्रात्तु श्रीरागो वामदेवाद्वसंतकः अघोराद्भैरवो
जात स्तत्पुरुषात्पंचमोभवत् ॥८॥

भई श्रीकंठिका वेगाली लिंगाधारी भैरवी
इत्यादिक होतियां भई अब भाषा दो प्रका १६

रकी कथन करीहै कहीं तीसरी नागभाषा
भीहै जो नागलोककी वाणीहै एकदिव्य

ईशानास्यान्मेघरागो नाट्यारंभे शिवादभूत गिरिजायास्मुखाल्लास्येन
टनारायणोऽभवत् श्रीकेरिकाचवेगाथा: लिंगाधारीचमैंथवी इत्यादि
ग्रथभाषा॰ दिव्यंचमानुषंचैवगीतेस्यादिव्यमानुषं। दिव्यंसंस्कृते॰ ग्रप
रंमानुषंतन्नदेशजम् प्राकृतोस्यैचादिव्यंस्यात्मानुष्यांतंचमानुषम्॰

जो संस्कृत दूसरी मनुष्यवाणी वोह ग्रने॰
क प्रकारकीहै जिस देशमें जो वाणी प

गा॰ १८ क वर्णिका है कथा एक प्रकारसें जिसकोंस
भी जन उस देशके कनेंथ करैं सो एक॰

17

केचिद्देशविशेषोत्थभाषयामानुषंविदुः अंगवंगकलिंगाद्या देशभा
षाः प्रेरिताः येषु येषु विशेषेषु या भाषास्सैकवर्णिकाः ताविस्तरताज
नालापारालत्संप्रयोजयेत्॥

वर्णिका होती है। सो सो उस देशकी भाषा
होती है जैसें अंग बंग कलिंग इत्यादिक
देशोंकी वाणी भाषा होती है सोभी देश

१८

कारकी है एक बद्ध एक अबद्ध रागोमें वि
स्तत है जो छंदमें युक्त हो सो बद्ध भाषा ।
होती है और केवल सरल रूपी वाणी हो
तो उसको अबद्ध कहते हैं सो अच्छी रीति
में जान कर एक भाषाका सयोजन बना ।
बना चाहिये ॥ ० ॥ इत्यनुक्रमणिकापाठः

रामायण ध्याय

रा. १८

18

नं. ५

१८८०

१८